REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2024

हिंदी भाषा का इतिहास

Dr. K. Soniya
Andaman and Nicobar Island.

आर्यों का भारत में आगमन

हमारे पूर्वज जो सबके एक ही माने जाते हैं जो आदिम भाषा बोलते होंगे। यह लोग जब अलग-अलग क्षेत्र में जाकर बसने लगे तब इनकी भाषा में परिवर्तन आया। इनमें आर्य भाषा ,शमी भाषा, तूरानी भाषा है। तू रानी भाषा के अंतर्गत चीनी, जापानी, द्रविड़ है। शमी भाषा के अंतर्गत अरबी, हब्शी आते हैं। आर्य लोग मध्य एशिया के माने जाते हैं। जब आर्य लोग पश्चिम क्षेत्र की ओर गए तब इन्होंने अंग्रेजी , लेटिन, ग्रीक, यूनानी भाषा को जन्म दिया। जब यह पूर्व क्षेत्र की ओर गए तब यह दो भागों में बटे एक ईरान में जाकर बसे दूसरे भारत में जाकर बसे। ईरान में लोग मीडी और फारसी भाषा का प्रयोग करते थे। भारत में आकर आर्यों ने संस्कृत भाषा को जन्म दिया। आर्य लोग भारत में आकर सबसे पहले जो संस्कृत बोलते थे उसे वैदिक संस्कृत नाम दिया गया। इसे देव वाणी, पुरानी संस्कृत भी कहते हैं। इसका समय **1500**ई.पू से **1000** ई.पू.माना जाता है। इसमें चार वेद लिखे गए ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद। इसी समय उस वक्त एक और भाषा का जन्म हो रहा था जो आम या सामान्य लोगों में बोली जाती थी। वैदिक संस्कृत शुद्ध भाषा थी। जन सामान्य की भाषा जो बोलचाल की भाषा थी। पाणिनि के व्याकरण के आने से पहले तक की भाषा को वैदिक संस्कृत कहते हैं और पाणिनि के व्याकरण के आने के बाद का संस्कृत को हम लौकिक संस्कृत कहते हैं।

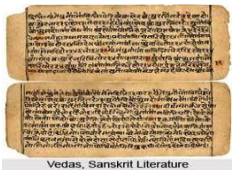
Vedas, Sanskrit Literature

संस्कृत व्याकरण

महर्षी पाणिनि

वैदिक संस्कृत के लुप्त होने का कारण यह था कि वह लोगों के समझ में नहीं आती थी क्योंकि वैदिक संस्कृत काफी जटिल होती थी जो आम लोग बोल नहीं पाते थे और यह उच्च कोटि व ब्राह्मण तक ही सीमित रह गई। संस्कृत का अर्थ है सुधारा गया ,संस्कार किया गया। महर्षी पाणिनि द्वारा संस्कृत व्याकरण अष्टाध्याई की रचना की। इनका समय **1000** ईसा पूर्व से **500** ईसा पूर्व है। व्याकरण की दृष्टि से लौकिक संस्कृत का निर्माण किया गया। इसी संस्कृत में रामायण, महाभारत, कालिदास जी की रचनाएं प्रसिद्ध है। नालंदा विश्वविद्यालय में पाणिनि जी को भाषा कोश निर्माण का काम सोपा गया इन्होंने बौद्ध हाइब्रिड संस्कृति कोश का निर्माण किया इस कोश का अध्ययन करके विदेशी छात्र बौद्ध ग्रंथ को पढ़ने का कार्य करते थे।

नालंदा विश्वविद्यालय

संस्कृत भाषा से पाली के रूप में विकसित हुई।

पाली भाषा

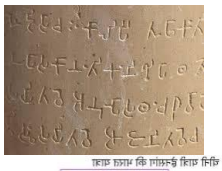

इसका समय **1000** ईसा पूर्व से प्रथम सदी तक का है। पहली सदी तक आते-आते पाली भाषा प्राकृत भाषा के रूप में विकसित हुई

प्राकृत भाषा

इसका समय **100** ई से **500** ई तक है। प्राकृत भाषा से अपभ्रंश भाषा का विकास माना जाता है। इसका समय **500** ई से **1000** ई तक है। अपभ्रंश का अर्थ है बिगड़ा हुआ। अपभ्रंश का सबसे पहला प्रयोग पतंजलि की रचना में प्राप्त होता है। अपभ्रंश सब भाषाओं का बिगड़ा हुआ रूप है। अपभ्रंश के अंतर्गत कई भाषाएं आती है। शोर सैनी , अर्द्धमागधी, बैसाची, पैशाची, व्रचड, खस, मागधी, महाराष्ट्रीय। चंद्रधर शर्मा गुलेरी से संक्रांतिकाल भाषा को पुरानी हिंदी कहा गया है।

चंद्रधर शर्मा गुलेरी

अपभ्रंश भाषा के बाद हिंदी भाषा के रूप में विकसित हुई

हिंदी शब्द की उत्पत्ति

संस्कृत पालि प्राकृत अपभ्रंश आदि किसी भी प्राचीन भारतीय भाषा में हिंदी शब्द उपलब्ध नहीं है। हिंदी शब्द ईरानियों की देन है। ईरानियों का प्राचीन नाम पारस है जो फारसी बोलते थे। संस्कृत की 'स' ध्वनि फारसी में 'ह' बोली जाती है जैसे सप्ताह का हफ्ता सिंधु नदी के पास रहने वालों को ईरानी हिंदू कहते थे। सिंधी नदी को हिंदी या हिंद कहने लगे। नदी के पार का संपूर्ण भूभाग हिंदी या हिंदुस्तान कहलाने लगा हिंद प्रदेश की भाषा हिंदी कहलाई। **13**वीं सदी में हिंदी शब्द का प्रयोग अबू सईद,औफी और अमीर खुसरो ने अपनी ग्रंथ में किया था। **1424** ई में शरफुद्दीन यज्दी में अपने ग्रंथ जफरनामा में हिंदी शब्द का प्रयोग किया।

जफरनामा

सिंधु शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में मिलता है हिंदी शब्द मूलतः फारसी का है हिंदी शब्द का विकास कई चरणों में हुआ है। सिंधु- हिंदू- हिंद+ई- हिंदी भाषा और बोली में अंतर

भाषा

भाषा संचार का प्राथमिक वहां है। भाषा व्यक्ति के व्यक्तित्व और समाज की संस्कृति को दर्शाती है । संस्कृति का विकास भी करती है।

बोली

एक छोटे से क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा है। बोली में साहित्य रचना नहीं होती बोली में साहित्य रचना होने लगी तो यह बोली ना होकर उपभाषा भाषा बन जाती है अवधी बोली अब भाषा बन गई है।

हिंदी भाषा की लिपि

सबसे पहले भाषा का जन्म हुआ और उसकी सार्वभौमिकता और एकात्मकता के लिए लिपि का आविष्कार हुआ। भाषा की अभिव्यक्ति ही लिपि है। हिंदी की लिपि देवनागरी लिपि है। देवनागरी लिपि में अक्षर **52** ,स्वर **14,** व्यंजन **38** है। भारत में तीन लिपियां प्राप्त हुई। ब्राह्मी लिपि ,खरोष्ठी लिपि, सिंधु हड़प्पा की चित्र लिपि।

सिंधु हड़प्पा की चित्र लिपि

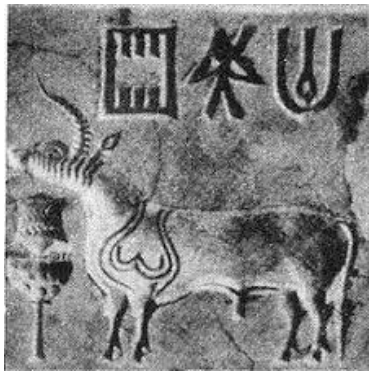

सिक्को और शिलालेखों में प्राप्त दो लिपियां हैं ब्राह्मी और खरोष्ठी। ब्राह्मी लिपि के अंतर्गत **2** लिपियां हैं। नागरी लिपि शारदा लिपि।

ब्राह्मी लिपि

नागरिक के अंतर्गत दो शाखाएं हैं पूर्वी शाखा पश्चिम शाखा। पूर्वी शाखा के अंतर्गत बांग्ला असमिया उड़िया आती है। पश्चिमी शाखा के अंतर्गत देवनागरी, राजस्थानी ,गुजराती लिपि आती है। शारदा लिपि के अंतर्गत कश्मीरी ,गुरुमुखी ,लेहड़ा, टैंकरी लिपि आती है।

शारदा लिपि

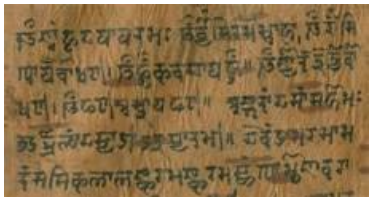

भारत में सभी लिपियों का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है ब्राह्मी लिपि का प्रयोग वैदिक आर्यो ने शुरू किया था। लिपियों की शुरुआत सबसे पहले चित्र लिपि द्वारा हुई जो आदिमानव द्वारा किया जाता था इसके बाद आया प्रतीक लिपि फिर भाव लिपि इसके बाद ध्वनि लिपि। ध्वनि लिपि के दो रूप हैं अक्षरात्मक और वर्णनात्मक। अक्षरात्मक लिपि के अंतर्गत भारत की सभी लिपियां आती है। रोमन लिपि वर्णनात्मक है। भारत में कुल **22** लिपियों का प्रचलन है- ब्राह्मी ,खरोष्ठी, गुप्त ,कुटिल, देवनागरी ,शारदा ,बांग्ला, तेलुगू, कन्नड़ ,ग्रंथ, कलिंग ,तमिल, बट्टेलुतु, मलयालम गुरमुखी गुजराती मैथिली मोडी, कौथी, महाजनी, उर्दू ,रोमन।

खरोष्ठी लिपि

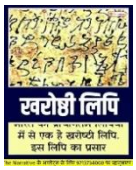

खरोष्ठी लिपि

यह हिब्रो भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है लिखावट।भारत में पंजाब के शाह बाज गढ़ी स्थान में इसका प्रथम प्रयोग देखने को मिलता है । अशोक के शिलालेखों में भी खरोष्ठी लिपि मिल जाती है।

ब्राह्मी लिपि

प्राचीनतम नमूना बस्ती जिले में पिपरावा के स्तूप तथा अजमेर जिला का बड़ली गांव में प्राप्त हुआ है।

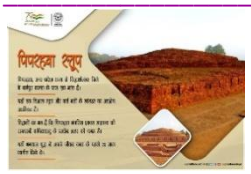

ऐसा कहा जाता है ब्रह्मा द्वारा निर्मित होने के कारण इसको ब्राह्मी नाम दिया गया है। एक मान्यता यह भी है कि एक ब्रह्मा नामक आचार्य थे जिनके नाम पर ब्राह्मी लिपि का नामकरण हुआ इसका प्रमाण एक चीनी यात्री फॉरवान के ग्रंथ शलौन में मिलता है।

चीनी यात्री फॉरवान

350ई के बाद यह दो शाखों में बाटे उत्तरी शाखा दक्षिणी शाखा।

देवनागरी लिपि

कुछ विद्वानों के अनुसार ललित विस्तार में वर्णित नाग लिपि के आधार पर इसका नाम नागरिक पड़ा। कुछ विद्वानों के अनुसार गुजरात में नागर ब्राह्मणों द्वारा प्रयोग किए जाने के कारण इसका नाम नगरी पड़ा काशी को देवनगर कहां जाता है वहां प्रचलित होने के कारण इसे देवनागरी कहलाया। पंडित किशोरी दास वाजपेई के अनुसार देश के राष्ट्रभाषा किसी समय जो प्राकृत थी उसका नाम नागर था वह नागर भाषा या नगरी भाषा जिस लिपि में लिखी जाती थी उसे भी लोगों ने नगरी कहने लगे। गुजरात के नागर ब्राह्मणों ने इस लिपि को प्रचलित किया था इसलिए उनके नाम पर इसे नागरी लिपि कहा जाता है अपने अस्तित्व में आने के बाद इसमें सबसे पहले देव भाषा संस्कृत को लिपिबद्ध किया इसलिए नागरी में देव शब्द जुड़ गया और बन गया देवनागरी। देवनागरी लिपि को लोक नागरी या हिंदी लिपि भी कहा जाता है यह लिपि बाई ओर से दायी ओर लिखी जाती है। उर्दू भाषा के फारसी भाषा की लिपि फारसी लिपि है जो की दाएं से बाएं लिखी जाती है । देवनागरी लिपि चार भाषाओं में लिखी जाती है संस्कृत ,हिंदी, मराठी, नेपाली। हिंदी भाषा का विकास तीन चरणों में हुआ- प्राचीन हिंदी -**1000-1500**ई.मध्यकालीन हिंदी -**1500-1800**ई.आधुनिक हिंदी-**1800**- से अभी तक।

प्राचीन हिंदी-

11वीं सदी के पहले से ही भारत पर मुसलमान के आक्रमण शुरू हो गए थे उन्होंने लगभग **200** वर्षो में संपूर्ण उत्तर भारत पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था। उनकी अपनी भाषा फारसी थी परंतु उसे समय लोगों में प्राचीन हिंदी का प्रयोग होता था। **500** वर्षो में प्राचीन हिंदी के

अनेक रूप सामने आए डिंगल, पिंगल और ब्रजभाषा का काफी प्रभाव उसे समय दिखाई पड़ता है। इस समय हिंदी का एक नया रूप सामने आया हिंदी में **13**वीं शताब्दी के आसपास खुसरो के साहित्य में दिखाई देता है।

अमीर खुसरो

आदिकालीन हिंदी भाषा के विकास में उस समय के उपलब्ध धार्मिक साहित्य जैन, बौद्ध, नाथ, सिद्ध आदि का महत्वपूर्ण योगदान है।

मध्यकालीन हिंदी-

अपभ्रंश के जो रूप प्राचीन हिंदी में प्रयुक्त होते थे वह मध्यकाल में प्रायः लुप्त हो जाते हैं। यह वह समय है जब हिंदी की बोलियां स्वतंत्र रूप ले रही थी। हिंदी साहित्य को दो भाषा मिली अवधि और ब्रजभाषा। इस काल में बोलचाल की भाषा खड़ी बोली बन गई।

आधुनिक काल-

आधुनिक काल तक आते-आते हिंदी पूर्ण रूप से विकसित हो जाती है। इस काल में साहित्य ने ब्रज भाषा को छोड़ खड़ी बोली को अपना लिया। यह समय अंग्रेजों का शासक था इस कारण अंग्रेजी से अनेक ग्रंथ हिंदी खड़ी बोली में अनुवाद कार्य हुआ। लार्ड वेलेजली ने अंग्रेज़ अफसरों को भाषा की शिक्षा दिलाने के लिए जान गिलक्रिइस्ट की अध्यक्षता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की।

फोर्ट विलियम कॉलेज

ईसाई धर्म प्रचारकों ने भी खड़ी बोली हिंदी में धर्म का प्रचार शुरू किया उनका उद्देश्य धर्म प्रचार करना था पर इसे हिंदी भाषा को महत्व मिलने लगा। हिंदी प्रकृति तथा अपभ्रंश के माध्यम से संस्कृत की सीधी वंशज है यह द्रविडियन, तुर्की ,फारसी ,अरबी, पुर्तगाली और अंग्रेजी द्वारा प्रभावित और समृद्ध की गई भाषा है। सर्वप्रथम एक अंग्रेज प्रशासनिक अधिकारी जिसका नाम था जॉर्ज अब्राहम ग्रियसेन जिसने**1927**ई में **linguistic survey of India** अर्थात भारतीय भाषा सर्वेक्षण नIमक

किताब में हिंदी के उपभाषाओं व बोलियां में वर्गीकरण प्रस्तुत किया इन्होंने ही हिंदी की भाषाओं का वर्गीकरण सबसे पहले प्रस्तुत किया है।

जॉर्ज अब्राहम ग्रियसेन

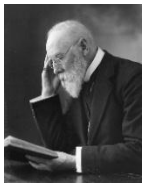

हिंदी की उपभाषा व बोलियां-

उपभाषा -**5** बोलियां -**17** पश्चिमी हिंदी के अंतर्गत पांच बोलियां हैं। खड़ी बोली या कौरवी , ब्रजभाषा, कन्नौजी, हरियाणवी या बांगरू। पूर्वी हिंदी के तीन बोलियों हैं अवधि, बुंदेली ,छत्तीसगढ़ी। बिहार हिंदी के तीन बोलियों हैं मगही, मैथिली, भोजपुरी। राजस्थानी हिंदी के चार बोलियां हैं मारवाड़ी, जयपुरी ,मालवी ,मेवाती। पहाड़ी हिंदी के दो बोलियां हैं कुमाऊनी,गढ़वाली।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

- हिंदी भाषा -डॉक्टर भोलानाथ तिवारी।
- हिंदी भाषा राजभाषा और लिपि- परमानंद पांचाल।
- हिंदी भाषा विकास और स्वरूप -कैलाश चंद्र भाटिया मोतीलाल चतुर्वेदी।
- हिंदी भाषा का इतिहास -डॉक्टर धीरेंद्र वर्मा ।
- हिंदी भाषा -डॉक्टर हरदेव बाहरी ।
- हिंदी भाषा का उद्भव और विकास -डॉक्टर उदय नारायण तिवारी ।
- हिंदी भाषा का विकास -डॉक्टर गोपाल राय।
- पुरानी हिंदी -पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी ।
- अपभ्रंश भाषा का अध्ययन- डॉक्टर वीरेंद्र श्रीवास्तव ।
- खड़ी बोली -श्री ओंकार राही।